महेश नवमी व्रत कथा PDF

प्राचीन कथाओं के अनुसार खड़कसेन नाम का एक प्रसिद्ध राजा था उसकी एक भी संतान नहीं थी उसने काफी जतन किए परंतु फिर भी उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति नहीं हुई घोर तपस्या करने के बाद राजा को एक पुत्र की प्राप्ति हुई। राजा ने अपने पुत्र का नाम सुजान कंवर रखा। ऋषियों ने राजा को बताया कि सुजान को 20 वर्ष तक उत्तर दिशा में जाने से मना किया गया है। जब राजकुमार बड़ा हुआ तो उसे युद्ध कला और शिक्षा का ज्ञान हुआ।

वह राजकुमार बचपन से ही जैन धर्म को बहुत मानते थे 1 दिन की बात है कि राजकुमार 72 सैनिकों के साथ शिकार के लिए जाते हैं परंतु वह उत्तर दिशा की ओर चले जाते हैं सैनिकों ने राजकुमार को काफी समझाया परंतु राजकुमार ने सैनिकों की बात नहीं मानी जैसे ही राजकुमार उत्तर दिशा की ओर आगे बढ़ता है वहां पर एक ऋषि तपस्या कर रहे थे राजकुमार के पहुंचने से उस ऋषि की तपस्या भंग हो जाती है और वह ऋषि राजकुमार को श्राप दे देता है जैसे ही राजकुमार को श्राप मिलता है राजकुमार पत्थर का बन जाता है राजकुमार के साथ जितने भी सैनिक थे वे सभी पत्थर के बन गए।

जब इस बात की जानकारी राजकुमार की माता चंद्रावती को हुई तो उन्होंने तुरंत उस ऋषि के पास जंगल में जाकर उससे माफी मांगी और अपने पुत्र को श्राप से मुक्त करने के लिए कहा उस ऋषि ने चंद्रावती को कहा कि महेश नवमी का व्रत करके राजकुमार को जीवनदान मिल सकता है और चंद्रावती ने महेश नवमी का व्रत किया जिससे उसके बेटे को जीवनदान मिला उसी दिन से इस दिन भगवान शंकर वह माता पार्वती की पूजा की जाती है और जो भी इस व्रत को सच्चे दिल से करता है भगवान निश्चित ही उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।

pdfinbox.com